Padma Shri



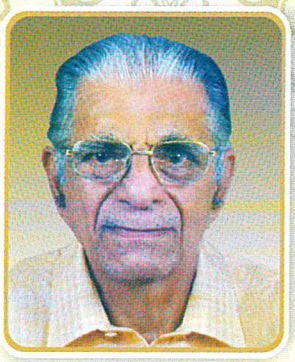
Shri N. Purushothama Mallaya

Shri N. Purushothama Mallaya is a renowned historian, research scholar, poet, linguist, epigraphist, archivist, educationist, senator, folklorist, writer, editor, translator and social worker who fought for the recognition of his mother tongue and is considered as a Crusader of `Konkani.

2. Born on May 7, 1929, Shri Mallaya served as Principal of Sri Ramakrisha Technical Institute, Cochin to provide coaching in all the commercial subjects recognized by Government of Kerala. Later on, he was fully devoted for the upliftment of his mother tongue Konkani. He established Konkani Bhasha Prachar Sabha, Kochi. His efforts resulted in achievements such as inclusion of Konkani in the 8th Schedule of the Indian Constitution, recognition to Konkani as an independent literary language for awards by Sahitya Akademi, New Delhi, declaration of Konkani Speakers as linguistic minority by Government of Kerala under Article 30 of the Indian Constitution, introduction of Konkani as an additional language in Thirumala Devaswom Primary Schools, Kochi; status of linguistic minority to Konkani speaking community and duly extending all privileges on that count by Karnataka State and establishing Chair for Konkani by Mahatma Gandhi University, Kottayam. His evidence for erstwhile Mysore Government before Mahajan Commission resulted in giving verdict that Konkani is an Independent language.

3. Shri Mallaya is the founder of first Konkani Bhasha Bhavan in India; Founder Secretary, Konkani Bhasha Prachar Sabha; Member Advisory Board for Konkani by Sahitya Akademy, New Delhi; Member, Kerala State Archives Advisory Committee; Member Folklore Fellows of India. Mysore University; Non-official Member/Expert in Konkani by Union Public Service Commission, New Delhi; and Trustee, Dr. T.M.A. Pai Foundation, Manipal; Reviewer of Konkani books, appointed by the Ministry of Education, Government of India; Member, Programme Advisory Committee, A.I.R. Trichur; Former Senate Member, Mahatma Gandhi University, Kottayam; Member Advisory Committee, Centre for Konkani Development Studies, Goa University; President, GSB, Mahasabha, Kerala; Managing Committee Member, Kerala History Association, Ernakulam. He has to his credit 27 literary publications in Konkani which include short stories, essay, folk-lore literature and poems. He introduced a new genre of poem in Konkani Literature called Satakams, So far, he has written 12 Satakams. As an epigraphist he deciphered copper plate No.8 of Kerala State Archives and wrote Introduction.

4. Shri Mallaya has received many accolades such as 'Saraswatha Ratna' from All India Saraswath Cultural Organisation Mumbai [1973], 'Viswa Konkani Vishesh Ratna' from World Konkani Convention, Mangalore [1995], Gold Medallion from Pope John Paul II in 1986, Manjunath Shanbhag Sahitya Seva Puraskar[2010] by Goa Konkani Akademy, prize under the Translation Category for translating the verses in Konkani of Tirukkural, Tamil Classic written by Saint Tiruvalluvar [2008] by Sahitya Akademy, New Delhi, received Vinobha Nagari Puraskar and the Viswa Konkani Jeevitha Sadan Samman 2011 by Vishwa Konkani Prathistan, Mangalore. He was also conferred the Title "Konkani Pithamaha".



श्री एन. पुरूषोत्तम मल्लया

श्री एन. पुरूषोत्तम मल्लया, एक जाने-माने इतिहासकार, शोध विद्धान, कवि, भाषाविद, पुरालेखाशास्त्री, पुरालेखपाल, शिक्षाविद्, सीनेटर, लोक साहित्यकार, लेखक, संपादक, अनुवादक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने अपनी मातृभाषा की पहचान के लिए संघर्ष किया है तथा 'कोंकणी' के योद्धा माने जाते हैं।

2. आपका जन्म मई 7, 1929 को हुआ। आपने केरल सरकार से मान्यताप्राप्त सभी वाणिज्यिक विषयों में कोचिंग उपलब्ध कराने से संबंधित श्री रामकृष्ण तकनीकी संस्थान, कोचीन में प्रधानाध्यापक के रूप में कार्य किया। बाद में आप अपनी मातृभाषा कोंकणी के उत्थान के प्रति पूरी तरह से समर्पित हो गए। आपने कोच्चि में कोंकणी भाषा प्रचार सभा की स्थापना की। आपके प्रयासों के फलस्वरुप, भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में कोंकणी को शामिल किए जाने, साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा पुरस्कार दिए जाने के संबंध में कोंकणी को एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा की मान्यता दिलवाने, भारत के संविधान के अनुच्छेद 30 के अंतर्गत केरल सरकार द्वारा कोंकणी भाषी लोगों को भाषायी अल्पसंख्यक घोषित करवाने, तिरुमाला देवास्वम प्राथमिक विद्यालयों, कोच्चि में कोंकणी को एक अतिरिक्त भाषा के रूप में शामिल कराने, कोंकणी बोलने वाले लोगों को भाषायी अल्पसंख्यक का दर्जा प्रदान करवाकर उसके आधार पर कर्नाटक राज्य से सभी विशेषाधिकार विधिवत् रूप से प्राप्त करने तथा महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टायम में कोंकणी भाषा की चेयर स्थापित कराने जैसी उपलब्धियां हासिल हुई हैं। महाजन आयोग के समक्ष पूर्ववर्ती मैसूर सरकार के संबंध में आपके साक्ष्य के कारण यह निर्णय दिया गया कि कोंकणी एक स्वतंत्र भाषा है।

3. आप, भारत में पहले कोंकणी भाषा भवन के संस्थापक; कोंकणी भाषा प्रचार सभा के संस्थापक सचिव; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के कोंकणी संबंधी सलाहकार बोर्ड के सदस्य; सदस्य, केरल राज्य पुरालेख सलाहकार समिति; भारत के लोकसाहित्य फैलो सदस्य, मैसूर विश्वविद्यालय; संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली में कोंकणी के गैर-सरकारी सदस्य/विशेषज्ञ; न्यासी, डॉ. टी.एम.ए. पाई फाउंडेशन, मणिपाल; शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नियुक्त कोंकणी पुस्तकों के समीक्षक; सदस्य, कार्यक्रम सलाहकार समिति, ए.आई.आर. त्रिचुर, पूर्व सीनेट सदस्य, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टायम; सदस्य, सलाहकार समिति, कोंकणी विकास अध्ययन केन्द्र, गोवा विश्वविद्यालय; अध्यक्ष, जी.एस.बी., महासभा, केरल; केरल हिस्ट्री एसोसिएशन, एर्नाकुलम के प्रबंधन समिति सदस्य हैं। आपको कोंकणी में 27 साहित्यिक प्रकाशनों का श्रेय जाता है, जिनमें लघु कहानियां, निबंध, लोक साहित्य और कविताएं शामिल हैं। आपने सतकाम नाम से कोंकणी साहित्य में कविता की एक नई विधा की शुरुआत की है। अब तक आपने 12 सतकाम की रचना की है। पुरालेखशास्त्री के रूप में आपने केरल राज्य पुरातत्व के तांबा प्लेट सं. 8 की गूढ़ लिपि का अर्थ निकाला है तथा प्रस्तावना लिखी है।

4. आपको अनेक सम्मान जैसे अखिल भारतीय सारस्वत सांस्कृतिक संगठन मुम्बई से 'सारस्वत रत्न' (1973) ; वर्ल्ड कोंकणी कन्वेंशन, मंगलोर से 'विश्व कोंकणी विशेष रत्न' (1995), वर्ष 1986 में पोप जान पाल द्वितीय से स्वर्ण मिडैल्यन, गोवा कोंकणी अकादमी द्वारा मंजुनाथ शानबाग साहित्य सेवा पुरस्कार (2010), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा संत तिरुवल्लूर द्वारा तमिल में लिखी गई महान कृति, तिरुकुरल के छंदों का कोंकणी में अनुवाद के लिए अनुवाद श्रेणी में पुरस्कार (2008), विश्व कोंकणी प्रतिष्ठान, मंगलोर द्वारा विनोभा नगरी पुरस्कार तथा विश्व कोंकणी जीविथा सदन सम्मान 2011 प्राप्त हुए हैं। आपको "कोंकणी पितामह" के खिताब से भी सम्मानित किया गया है।